भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं

खेमा

(महाप्रज्ञावतियों में अग्र)

एवं

उप्पलवण्णा

(ऋद्धिमतियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं

खेमा

(महाप्रज्ञावतियों में अग्र)

एवं

उप्पलवण्णा

(ऋद्धिमतियों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

धम्मगिरि, इगतपुरी

खेमा एवं उप्पलवण्णा

पुस्तक कोड : **H83**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण: अक्टूबर २०१४
संस्करण: सितंबर २०२५

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-364-8

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४१९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं महापञ्ञानं यदिदं खेमा।”

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं इद्धिमन्तीनं यदिदं उप्पलवण्णा।”

****

“भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में महाप्रज्ञावतियों में अग्र हैं खेमा।”

“भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में ऋद्धिमतियों में अग्र हैं उप्पलवण्णा।”

– *अङ्गुत्तरनिकाय (१. १. २३६-२३७)*

खेमा एवं उप्पलवण्णा

भगवान बुद्ध की अग्रश्राविकाएं

खेमा एवं उप्पलवण्णा

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

खेमा 11

खेमा और बिम्बिसार 11

मगध राजघराने की धर्म-चेतना 12

बिम्बिसार की युक्ति 12

धर्मसंवेग जागा 15

महाप्रज्ञावती खेमा 16

खेमा-पसेनदि संवाद 17

खेमा की बुद्धवंदना 20

लाभ-सत्कार से दूर 23

जातक कथा 24

डय्हमानो न जानाति 24

अतीत कथा 29

भगवान दीपंकर की भविष्यवाणी 29

पदुमुत्तर बुद्ध से गौतम बुद्ध का शासनकाल 29

उप्पलवण्णा 31

यथा-नाम-तथा-गुण 31

बुरे काम का बुरा नतीजा 32
क्षीणास्रव काम-सुख के परे 33
विनय-नियम 34
ऋद्धिमती उप्पलवण्णा 34
उप्पलवण्णा ने सबको प्रव्रजित किया 35
अनुकरणीय आदर्श 36
उप्पलवण्णा के उद्गार 36
अतीत कथा 38
भगवान दीपंकर की भविष्यवाणी 38
भगवान पदुमुत्तर एवं विपस्सी का शासनकाल 38
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल 39
विपश्यना साधना केंद्र 40

प्रकाशकीय

भगवान बुद्ध की वाणी से अभिसिंचित तिपिटक– भगवान के महाश्रावकों, महाश्राविकाओं, उपासकों, उपासिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंगों से ओत-प्रोत है। भगवान ने इनमें से कई पात्रों को उनके विशेष गुणों की वजह से उन्हें अग्र की उपाधि प्रदान की तथा उनके गुणों को अपने आचरण में उतारने के लिए परिषद को प्रेरित किया। प्रस्तुत पुस्तिका भिक्षुणी खेमा एवं उप्पलवण्णा के जीवन प्रसंगों पर आधारित है।

सागल की राजकुमारी खेमा अपूर्व सुंदरी थी। मगध सम्राट बिम्बिसार से विवाह होने पर उसे अग्र राजमहिषी का पद मिला। उसे अपने रूप-सौंदर्य पर बहुत गर्व था। इस कारण वह भगवान बुद्ध के संपर्क में आने से कतराती रही क्योंकि वे रूप में दोष देखते थे।

बिम्बिसार को भगवान की विपश्यना विद्या से अपूर्व शांति मिली थी। अत: वह चाहता था कि खेमा-सहित उसके समस्त प्रिय परिवार को भी यह शांति-प्रदायिनी विद्या मिले। परंतु वह यह भी जानता था कि खेमा को भगवान के प्रति घोर वितृष्णा है।

बिम्बिसार ने एक युक्ति से महारानी खेमा को वेळुवन उद्यान भिजवाया। भगवान ने धर्ममय ऋद्धिबल से खेमा के अंदर व्याप्त इस काया के प्रति तादात्म्य भाव, चिपकाव, आसक्ति से मुक्त होने का संवेग जगाया। खेमा को एहसास हुआ कि काम-मोह में डूबी रहने के कारण वह अपने ही हित-सुख से इतने दिनों तक वंचित रही।

खेमा ने भगवान के शासन में प्रव्रजित होकर अरहंत अवस्था प्राप्त की। वह लोकसेवा में लग गयी। प्रज्ञा के क्षेत्र में प्रखर होने के कारण धर्म सिखाने के काम में अत्यंत प्रभावशाली हुई। भगवान ने अपनी भिक्षुणी-श्राविकाओं में खेमा को महाप्रज्ञावतियों में अग्र की उपाधि दी।

एक अवसर पर खेमा ने महाराज पसेनदि (प्रसेनजित) के साथ हुए

संवाद में अपनी प्रखर प्रज्ञा का परिचय दिया।

कामतृष्णा से विमुक्त खेमा को मार भी अपने चंगुल में नहीं फँसा पाया बल्कि प्रज्ञावती खेमा ने मार को उल्टा डांट-फटकार लगाते हुए कहा– "इस दुर्गंधयुक्त, रोगी और नश्वर शरीर से आनंद मनाने में मुझे लाज आती है। मैंने काम-तृष्णा की जड़ काट रखी है।"

****

उप्पलवण्णा सावत्थी-निवासी श्रेष्ठी की पुत्री थी। अत्यंत रूपवती होने के कारण अनेक राजकुमार एवं श्रेष्ठिकुमार उसे प्राप्त करने के लिए लालायित थे। श्रेष्ठी अपनी पुत्री को किसी एक को सौंपकर दूसरों का शत्रु नहीं बनना चाहता था इसलिए अपनी पुत्री को प्रव्रजित होने का सुझाव दिया। पुत्री ने पिता के सुझाव को सहर्ष स्वीकार करते हुए प्रव्रज्या ग्रहण की और शीघ्र ही अरहंत अवस्था प्राप्त की। उप्पलवण्णा ने शेष जीवन लोक-कल्याण में लगाते हुए लोगों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया।

मार द्वारा साधना में विघ्न डालने पर वह तनिक भी भयभीत नहीं हुई बल्कि उप्पलवण्णा ने ही मार को फटकार लगाते हुए कहा– "तेरे जैसे एक लाख धूर्त्त भी आ जाएं तो मेरे एक रोएं को नहीं हिला सकते, न मुझे कंपायमान कर सकते हैं। तू अकेला मेरा क्या कर लेगा?"

भगवान ने आयुष्मान महामोग्गल्लान एवं सारिपुत्त को, क्रमशः, अपने महाऋद्धिमान, महाप्रज्ञावान भिक्षु-श्रावकों में अग्र की उपाधि प्रदान की। इसी तरह भिक्षुणी खेमा एवं उप्पलवण्णा को, क्रमशः, अपनी महाप्रज्ञावती, ऋद्धिमती भिक्षुणी-श्राविकाओं में अग्र की उपाधि प्रदान की तथा लोगों को इनके गुणों को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया।

भगवान ने इनके गुणों का प्रकाशन करते हुए परिषद में प्रज्ञप्त किया– "यदि तुम घर से बेघर हो जाओ तो वैसा ही बनना जैसे सारिपुत्त और मोग्गल्लान। मेरे भिक्षु-श्रावकों में यही दो आदर्श माने जाते हैं।

"बेटी! यदि तुम घर से बेघर हो प्रव्रजित होना तो तुम वैसा ही बनना जैसे भिक्षुणी खेमा तथा उप्पलवण्णा।

"भिक्षुओ, ये ही तुला हैं, ये ही प्रमाण हैं मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं के

लिए जो ये खेमा तथा उप्पलवण्णा भिक्षुणियां हैं। भिक्षुणी-श्राविकाओं में यही दोनों आदर्श हैं।”

भगवान बुद्ध के भिक्षु-श्रावकों एवं भिक्षुणी-श्राविकाओं के जीवन के प्रेरणादायी प्रसंग हम सबकी प्रेरणा का कारण बनें जिससे विपश्यी साधक एवं साधिकाएं उनसे प्रेरणा पाकर अपनी जीवन-शैली का पुनरवलोकन कर इसका यत्किंचित परिष्कार कर सकें। इन मंगलभावों के साथ इस पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विपश्यना विशोधन विन्यास